24 संसाधन
(Resources)

मनुष्य अपने जीवन में विभिन्न लक्ष्यों की संतुष्टि हेतु उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करता है। प्रत्येक व्यक्ति के पास अनेक साधन होते हैं जिनसे वह अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अतः किसी भी स्थान या क्षेत्र में उपलब्ध भौतिक वस्तुओं को **संसाधन** या साधन कहा जाता है जो मनुष्य की किसी भी आवश्यकता की पूर्ति के लिये उपयोग में लाया जा सके। गृह व्यवस्था में पारिवारिक साधनों का प्रयोग ऐसी कुशलता के साथ किया जाता है कि निर्धारित मूल्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके। साधनों का अनगिनत तरीकों से उपयोग किया जा सकता है। गृहिणी जितनी अधिक कुशलता के साथ पारिवारिक साधनों को पहचान कर उनका मितव्ययता एवं विवेकशीलता से प्रयोग करेगी, गृह व्यवस्था उतनी ही उत्तम होगी।

प्रायः हम अपने घर में सुबह से लेकर शाम तक अनेक क्रियाएँ करते हैं। प्रत्येक क्रिया को करने हेतु हमें समय, शक्ति व साधनों की आवश्यकता होती है। वस्तु खरीदने हेतु धन की आवश्यकता होती है। धन कमाने हेतु ज्ञान व कौशल की आवश्यकता होती है। खेलने के लिए पार्क तथा शरीर के बीमार पड़ जाने पर चिकित्सालय की आवश्यकता पड़ती है। अतः समय, शक्ति, धन, ज्ञान, कौशल, पार्क एवं चिकित्सालय सभी विभिन्न साधन हैं जो हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

साधनों का वर्गीकरण

पारिवारिक साधनों को सरलता की दृष्टि से निम्नलिखित दो प्रमुख वर्गों में बाँटा जा सकता है :

(1) मानवीय साधन (Human Resources)

(2) गैर मानवीय/भौतिक साधन (Non-human/Material Resources)

समय, शक्ति, ज्ञान, अभिवृत्ति, कौशल इत्यादि मानवीय साधन हैं तथा धन, वस्तुएँ, जायदाद, सामुदायिक सुविधाएँ आदि अमानवीय साधन हैं। पारिवारिक साधनों को उचित उदाहरणों द्वारा निम्नलिखित ढाँचे में प्रस्तुत किया गया है तथा चित्र 24.1 में दर्शाया गया है।

पारिवारिक साधन

मानवीय साधन	**गैर मानवीय/भौतिक साधन**
(i) समय	(i) धन
उदा.: एक घंटा, एक दिन, एक सप्ताह, एक महीना, एक वर्ष या संपूर्ण जीवन।	उदा.: व्यवसाय, नौकरी , बचत, मजदूरी, विनियोजन आदि से प्राप्त आय (पैसे/रुपये)।
(ii) शक्ति	(ii) भौतिक वस्तुएँ/सम्पत्ति
उदा.: किसी भी कार्य को करने	उदा.: भोजन, उपकरण, कार,

के लिये शक्ति।	कम्प्यूटर, जमीन, मकान, खेत आदि।
(iii) ज्ञान उदा. : विभिन्न सिद्धान्तों को समझना या आवश्यक जानकारी होना।	(iii) सामुदायिक सुविधाएँ उदा. : स्कूल, पुस्तकालय, बगीचा, यातायात सेवाएँ, अस्पताल, जल एवं विद्युत आपूर्ति, ऊर्जा स्त्रोत आदि।
(iv) कौशल या योग्यता उदा. : सिलाई, गृह सज्जा एवं पेंटिंग।	
(v) अभिवृत्ति उदा. : कार्य के प्रति धारणा या दृष्टिकोण	
(vi) रुचि उदा. : कम्प्यूटर पाठ्यक्रम में रुचि होना।	

1. मानवीय साधन (Human Resources) :

मानवीय साधन आन्तरिक होते हैं अतः इन्हें व्यक्तिगत साधन भी कहा जाता है। मानवीय साधन सीमित होते हैं परन्तु अभ्यास और ज्ञान में वृद्धि करके इनकी सीमा बढ़ाई जा सकती है।

(i) समय (Time) :

समय एक महत्त्वपूर्ण मानवीय साधन है। प्रत्येक व्यक्ति को सीमित एवं बराबर का समय प्राप्त होता है। समय व्यतीत हो जाने पर पुनः लौटाया नहीं जा सकता। कार्यों के करने में व्यय होने वाली समयावधि इसके अन्तर्गत आती है। समय का सदुपयोग करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है।

(ii) शक्ति (Energy) :

घर के विभिन्न कार्य सम्पादित करने के लिए पारिवारिक सदस्यों की शक्ति व्यय होती है। कोई भी शारीरिक एवं मानसिक कार्य शक्ति के बिना संभव नहीं है। यह भी एक सीमित साधन है। अतः कार्य करने हेतु सही तरीका अपनायें ताकि कम शक्ति में अधिक कार्य सम्पन्न किया जा सके।

(iii) ज्ञान (Knowledge) :

ज्ञान तथ्यात्मक (Factual) तथा सम्बन्ध विषयक (Related) हो सकता है। कहा जाता है "ज्ञान ही शक्ति है" (Knowledge is power)। आजकल बाजार में कई प्रकार की वस्तुएँ एवं उपकरण उपलब्ध हैं। गृहिणी को इन सभी वस्तुओं का ज्ञान एवं उपयोग में लाने की जानकारी होनी चाहिये। जैसे वस्त्र चयन एवं मकान बनाने हेतु आवश्यक जानकारी, गृह व्यवस्था के विभिन्न सिद्धान्तों को समझना आदि। ज्ञान के द्वारा ही विकल्पों का चुनाव उचित रूप से किया जा सकता है। अज्ञानतावश कभी–कभी साधनों का उपयोग व्यर्थ में ही अधिक हो जाता है।

(iv) कौशल (Skill)/योग्यताएँ (Abilities) :

कौशल से अभिप्राय है किसी भी कार्य को करनेकी कुशलता, जैसे कपड़े सिलने, कढ़ाई करने, भोजन

चित्र 24.1 पारिवारिक साधन

बनाने आदि में। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी काम में कुशल होता है।व्यक्ति जिस कार्य में कुशल हो उसे उसी क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिये। कुशलता प्रकृति–प्रदत्त तथा अर्जितदोनों ही प्रकार की हो सकती है।

(v) अभिवृत्ति (Attitude) :

वे भावनाएँ अभिवृत्ति कहलाती हैं जो किसी कार्य को करने के लिए उत्प्रेरित अथवा निरूत्साहित करती हैं। हमारे मूल्यों एवं लक्ष्यों के आधार पर मनोवृत्ति का निर्माण होता है। परिवर्तन को स्वीकार करना, आशावादी या निराशावादी होना व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ है। मान लीजिए, आप अपना व्यवसाय करना चाहते हैं और आप के मन में अगर यह बात घर कर जाये कि इसमें सफलता मिलना मुश्किल है तो आप कभी भी अच्छे व्यवसायी नहीं बन सकते। आशावादी व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर दूसरों की सहायता लेकर और संघर्षों का विवेकशील दृष्टिकोण रखते हुए सामना करते हैं।

(vi) रुचि (Interest) :

रुचि एक महत्त्वपूर्ण साधन है। किसी कार्य को करने में अत्यधिक मन लगना या लगाव होना उस कार्य में रुचि का द्योतक है। रुचि होने पर कार्य की कुशलता बढ़ जाती है। फलस्वरूप कार्य की गुणवत्ता (Quality) एवं मात्रा (Quantity) दोनों में बढ़ोतरी होती है। रुचि में कमी होने पर कार्य नीरस लगने लगता है और थकान जल्दी होती है।

2. गैर मानवीय साधन (Non human resources) :

अमानवीय साधन आन्तरिक नहीं होते। इन साधनों को प्राप्त किया जा सकता है। इन्हें आसानी से देखा एवं महसूस किया जा सकता है।

(i) धन (Money) :

विनिमय (Exchange) अर्थ व्यवस्था में धन के बदले वस्तुएँ, सेवाएँ तथा यांत्रिक शक्ति प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ : हम चिकित्सक की सेवा लेने पर बदले में धन अदा करते हैं तथा दुकानदार से दवा लेने पर दवा का मूल्य देते हैं। बचत, मजदूरी, विनियोजन पर आय आदि धन में ही सम्मिलित है। यह साधन सबके पास समान मात्रा में नहीं पाया जाता, किसी के पास ज्यादा तो किसी के पास कम होता है।

(ii) भौतिक वस्तुएँ एवं सम्पत्ति (Material goods and property) :

धन के विनियम द्वारा हम भौतिक वस्तुएँ एवं सम्पत्ति प्राप्त करते हैं। परिवार की चल, अचल, टिकाऊ व नश्वर सभी वस्तुएँ सम्पत्ति होती हैं, जैसे सभी सुख सुविधाएँ, भोजन, कपड़ा, मकान, जमीन, खेत आदि। इन सभी का उपयोग कर हम लक्ष्य प्राप्त करते हैं।

(iii) सामुदायिक सुविधाएँ (Community resources) :

ये वे सभी सुविधाएँ हैं जिनके लिए परिवार प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करता तथा उसे ये सुविधाएँ समाज द्वारा उपलब्ध कराई जाती हैं और सभी व्यक्ति अपनी आवश्यकता एवं सामर्थ्य के अनुसार इनका उपभोग करते हैं। जैसे : उद्यान, सड़क, विद्यालय, पुस्तकालय, चिकित्सालय, पुलिस संरक्षण, परिवहन, बाजार, जल, बिजली वितरण आदि।

साधनों के प्रबन्ध की आवश्यकता (Need to manage resources):

साधन अनेक हैं, इनमें से कुछ तो प्रत्येक व्यक्ति के पास उपलब्ध होते हैं और कुछ अर्जित किये जा

सकते हैं। पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी प्रकार के साधनों का उपयोग किया जाता है। मनुष्य की इच्छाएँ अनेक हैं जिन्हें वह अपने जीवन में संतुष्ट करना चाहता है पर यह भी सर्वविदित है कि इनको पूरा करने के लिए साधन सीमित हैं जैसे समय एक सीमित साधन है। प्रत्येक व्यक्ति के पास दिन में 24 घंटे होते हैं। इसी प्रकार व्यक्ति और परिवार की आय सीमित होती है। व्यक्ति की कार्य क्षमता एवं बुद्धिमत्ता में भी सीमितता पायी जाती है। कम से कम साधनों का उपयोग कर अधिकाधिक लक्ष्यों की प्राप्ति ही प्रबन्ध की विशेषता है। साधनों के अनेक उपयोग सम्भव हैं। लक्ष्य प्राप्ति को सुधारने के लिए साधन की वैकल्पिक उपयोगिता को जान लेना आवश्यक है। निर्णय लेने से पहले किन साधनों का उपयोग किन कार्यों के लिये उपयुक्त रहेगा यह ज्ञात कर लेना आवश्यक है। सीमित साधनों से अधिकतम सन्तोष प्राप्त करने के लिए हम एक कम उपयोगी साधन को अधिक उपयोगी साधन से प्रतिस्थापित (Substitute) कर सकते हैं।

हमें योजनाबद्ध विधि से सीमित साधनों का उपयोग करना चाहिये। साधनों का प्रबन्धन जीवन के लिए आवश्यक है। सम्पूर्ण जीवन की गुणवत्ता सुधारने के लिए यह आवश्यक है कि साधनों की पहचान हो एवं इनका उचित उपयोग हो ताकि लक्ष्य प्राप्ति की जा सके। उदाहरण के लिये सिलाई कला में निपुण महिला न केवल अपने व परिवार के परिधान सिलकर धन की बचत कर सकती है बल्कि दूसरों के परिधान सिलकर धन कमा सकती है एवं अपने समय व कौशल का सदुपयोग कर पारिवारिक आय बढ़ाकर जीवन स्तर को उन्नत कर सकती है।

सामुदायिक संसाधनों को संरक्षित करने के उपाय (Conservation of community resources) :

सामुदायिक वस्तुएँ जैसा कि हमें ज्ञात है, वे साधन हैं जिनका मूल्य हमें प्रत्यक्ष रूप से अदा नहीं करना पड़ता है। प्रायः ये अमानवीय एवं भौतिक साधन हैं जैसे परिवहन, सड़क, चिकित्सालय, पुस्तकालय, विद्यालय, उद्यान, सिनेमाघर आदि। आमतौर पर यह देखा गया है कि सामुदायिक सुविधाओं का संरक्षण एवं सही उपयोग नहीं होता है क्योंकि ये निजी या व्यक्तिगत नहीं होते। प्रत्येक व्यक्ति अपने साधनों का तो सदुपयोग करता है तथा उनका संरक्षण भी करता है पर सामुदायिक वस्तुओं के उपयोग में लापरवाही करता है। यही कारण है कि कई उद्यानों की हालत खराब हो जाती है, सड़कें टूट जाती हैं तथा जल आपूर्ति के पाइप में जल रिसाव होने लगता है। प्रत्येक व्यक्ति यह सोचता है कि सामुदायिक वस्तुओं को सुचारु रूप से रखने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की है न कि आम नागरिक की। यही कारण है कि हम देखते हैं सामुदायिक वस्तुओं का सरेआम दुरुपयोग होता है और इन सुविधाओं, जो कि हमारे परिवार के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन है का दिन प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है। अतः यह प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है कि नगर में उपलब्ध सभी सामुदायिक वस्तुओं एवं सुविधाओं का पूर्ण संरक्षण करें तथा इनका उपयोग सोच समझकर करें ताकि लम्बे समय तक हम इनका लाभ प्राप्त कर सकें।

प्राचीन काल में जीवन इतना आसान नहीं था जितना की इस युग में है। आज हमें हमारे इर्द गिर्द कई सामुदायिक सुविधाएँ प्राप्त हैं। ये सभी हमारे परिवार की सम्पदा हैं। इन सभी सुविधाओं के लिये हम प्रत्यक्ष रुप से तो कोई मूल्य नहीं चुकाते हैं पर अप्रत्यक्ष रुप से हम विभिन्न करों (taxes) के माध्यम से सरकार को इनका मूल्य अदा करते हैं। इस कर रूपी मूल्य में से ही कुछ हिस्सा हमें सामुदायिक सुविधाएँ दिलाने में सहायक होता है। अतः हमें इन साधनों के व्यवस्थापन हेतु पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिये क्योंकि ये सुविधाएँ हमारे द्वारा ही हमें प्राप्त हुई हैं।

सामुदायिक सुविधाओं की एक और विशेष बात यह है कि हम सभी इन साधनों का उपयोग करते हैं। जैसे सार्वजनिक चिकित्सालय शहर के सभी नागरिकों के लिये है। कोई भी व्यक्ति इसकी सेवाएँ ले सकता है, चाहे वह अमीर हो या गरीब, पुरुष हो या स्त्री आदि। इसी प्रकार सरकार ने प्रत्येक गाँव एवं शहर में अनाज, शक्कर एवं केरोसीन आदि वस्तुओं के वितरण को नियंत्रित करने हेतु सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत राशन की दुकानों का प्रावधान रखा है। जिसका मुख्य उद्देश्य प्रत्येक परिवार को उनके सदस्यों की संख्या के अनुसार निश्चित दाम व मात्रा में सामान उपलब्ध कराना है।

सामुदायिक सुविधाओं की उपलब्धता एक जगह से दूसरी जगह पर भिन्न हो सकती है, कहीं ज्यादा तो कहीं कम, कहीं पास तो कहीं दूर हो सकती है। हमें इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि अगर कोई सुविधा हमारे आस–पास उपलब्ध है तो यह हमारी निजी सम्पत्ति नहीं है वरन् हमें इस सुविधा को पूरे समूह के व्यक्तियों के साथ मिलजुल कर उपयोग में लेना चाहिये।

जिस प्रकार अन्य साधन सीमित होते हैं ठीक उसी प्रकार सामुदायिक सुविधाएँ भी सीमित होती हैं अतः इनका सही प्रबन्ध आवश्यक है। इनका दुरुपयोग हम सभी के लिये परेशानी का कारण बन सकता है। चूंकि समूह के सभी व्यक्ति इन सुविधाओं का उपयोग करते हैं तो यह हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी हो जाती है कि हम इनका संरक्षण करें तथा विवेकशीलता से उपयोग करें। इन सुविधाओं पर सिर्फ अपना हक ही ना समझें वरन् इनके संरक्षण के प्रति अपना कर्त्तव्य भी समझें।

कुछ सामुदायिक साधनों की बचत एवं प्रबन्ध (Management and Conservation of some community resources) :

i. विद्युत ऊर्जा (Electricity) :

विद्युत ऊर्जा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। यह कई कार्यों हेतु उपयोग में लायी जाती है जैसे रोशनी, खाना बनाना, पंखे चलाना, पानी व स्थान को गर्म करना इत्यादि। जनसंख्या वृद्धि एवं आधुनिकीकरण ने हमें यह अच्छी तरह सिखला दिया है कि यह एक सीमित एवं महंगा साधन है अतः यदि हम इसका उपयोग सही तरीके से नहीं करेंगे तो इस साधन में कटौती निश्चित है। विद्युत ऊर्जा के बचाव के लिए हम निम्न तरीके अपना सकते हैं :

(1) किसी भी विद्युत चलित यंत्र को उपयोग में लाने से पहले योजना बना लें ताकि यंत्र चलाने के बाद विद्युत शक्ति बेकार न जाए।

(2) प्रत्येक विद्युत चलित यंत्र सही रुप से काम में लिया जाए ताकि विद्युत ऊर्जा का दुरुपयोग न हो।

(3) अनावश्यक बल्ब व ट्यूब लाइट न जलावें। कमरे से निकलने के साथ ही इन्हें बन्द करें। बल्ब की जगह ट्यूब लाइट का प्रयोग करें तथा इसको कमरे में सही जगह लगावें। बाजार में उपलब्ध कॉम्पेक्ट फ्लोरोसेंट लैंप (सी.एफ.एल.) का प्रयोग करें। जो बहुत कम विद्युत ऊर्जा पर अधिक रोशनी देते हैं।

(4) प्राकृतिक रोशनी का अधिकतम उपयोग करें। घर की योजना बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि प्रत्येक कमरे में आवश्यकतानुसार रोशनी एवं हवा का प्रवाह रहे।

(5) यंत्रों का अनावश्यक उपयोग न करें। जहाँ तक हो सके इनका उपयोग मिल बाँट कर करें, जैसे दो कमरों में अलग अलग लाइट लगाकर पढ़ने से अच्छा है कि एक कमरे में बैठकर दोनों पढ़ लें।

ii. जल (Water) :

पानी के बिना जीवन असंभव है। पानी की उपलब्धता प्राकृतिक स्थितियों पर निर्भर है। जनसंख्या

वृद्धि तथा पर्यावरण में बदलाव ने इस साधन को अत्यन्त सीमित कर दिया है। अतः इसका बचाव करना हम सभी का कर्त्तव्य है।

1. पानी की प्रत्येक बूँद को सोच समझ कर खर्च करें।
2. काम समाप्त होने पर नल बन्द करें।
3. घर के सभी कपड़े एक साथ धो लेवें न कि अलग–अलग।
4. रसोईघर से निकले पानी को नालियों में व्यर्थ न बहाकर बगीचे में निकास देवें।
5. यदि पानी का स्त्रोत सामुदायिक है तो उसके रख रखाव का पूरा ध्यान रखें तथा नल को खुला न रहने दें।
6. यदि बहुत लोगों को पानी भरना है तो एक कतार बना कर पानी भरें।
7. भूमिगत पानी को प्रदूषण से बचाने हेतु यह ध्यान रखें कि शौचालय के गड्ढे 10–12 मीटर से गहरे न हों।
8. पानी को योजनाबद्ध तरीके से उपयोग में लें।

iii. ईंधन (Fuel) :

घरों में ईंधन का प्रयोग प्रायः खाना पकाने के लिये किया जाता है। इसके बचाव हेतु निम्नलिखित तरीके अपनाये जा सकते हैं :

1. ताप के साधन को जलाने से पहले सारी तैयारी कर लें जैसेः धोना, साफ करना, काटना, मसाले इकट्ठे करना आदि।
2. जैसे ही वस्तु पक जाए आँच बन्द करें।
3. समतल पैदें वाले और चौड़े बर्तनों का उपयोग करें।
4. एक बार वस्तु उबल जाए तो आँच धीमी कर दें।
5. खाद्य पदार्थ को उबालते समय कम से कम पानी का प्रयोग करें।
6. खाद्य पदार्थों को (चावल, दाल आदि) पकाने से पहले भिगो दें, इससे पकाने में कम समय लगेगा।
7. चूल्हे का बर्नर (Burner) पूरी तरह साफ होना चाहिये इससे लौ एकदम चमकीली नीली आएगी। यदि पीली आँच आती है तो लौ सही नहीं है और ईंधन भी अधिक खर्च होगा।
8. पकाते समय बर्तन को उचित ढक्कन से ढकें।
9. ईंधन बचाने वाले उपकरण जैसे प्रेशर कुकर का उपयोग करें।
10. खाना पकाने के लिये तांबे के पैंदें वाले बर्तनों का उपयोग करें।
11. फ्रिज से निकाल कर वस्तुओं को एकदम आँच पर न रखें, उन्हें सामान्य ताप पर आने दें, फिर गर्म करें।
12. बर्तनों को साफ सुथरा रखें।
13. यदि संभव हो तो एक साथ दो चीजे पकायें। जैसे – कुकर में दाल व सब्जी साथ पकाई जा सकती है।

iv. भूसा/चारा (Fodder) :

यह साधन ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है। यह साधन जानवरों के खाने के उपयोग में आता है। बचे हुए चारे का उपयोग खाद बनाने में तथा ग्रामीण घरों में छत बनाने के काम में लिया जा सकता है। इसको गोबर के साथ मिलाकर कण्डे भी बनाये जा सकते हैं, ताकि इसे ईंधन के रुप में उपयोग में लाया जा सके।

v. यातायात के साधन (Transport facilities) :

रेल, बस, हवाई जहाज इत्यादि यातायात के प्रमुख साधन है। सरकार इन्हें सुचारु रूप से चलाने के लिये कई प्रबन्ध करती है। साथ ही यह प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वे इनकी सुरक्षा करें तथा इन के नुकसान को रोकें। जब बसें या रेलेजलाई जाती हैं या दुर्घटनाग्रस्त हो जाती हैतो जान व माल दोनों का ही काफी नुकसान होता है और भरपाई हमें ही करनी पड़ती है। अतः अपनी सम्पत्ति समझकर इन साधनों का सावधानी पूर्वक उपयोग करना चाहिये।

vi. विद्यालय (School) :

विद्यालय का मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्रदान करना है। विद्यालय में अच्छा वातावरण बनायें, इसकी इमारत को साफ रखें तथा नुकसान न पहुँचायें। पुस्तकालय व प्रयोगशाला का सही ढंग से उपयोग करें। पुस्तकों को गंदा न करें तथा पन्ने न फाड़ें। उपकरणों का उपयोग सुरक्षापूर्वक करें। शिक्षकों का सम्मान करें तथा विद्यालय का नाम रोशन करें।

vii. चिकित्सालय (Hospital) :

चिकित्सालय को स्वच्छ रखें तथा प्रदूषण रोकने में मदद करें। चिकित्सालय की सुविधाओं का सही प्रयोग करें। चिकित्सालय में उपयोग में आने वाले यंत्रों का संरक्षण करें ताकि ये अपनी सेवाएँ आप को समय पर एवं लम्बे समय तक दे सकें। जहाँ तक हो सके दूसरे रोगियों को उनके दुःख दर्द में आराम पहुँचाने की कोशिश करें। इसकी सुविधाएँ बढ़ाने हेतु तन, मन व धन से सहयोग करें।

viii. बाग – बगीचे (Park) :

नगर पालिका शहर की योजना बनाते समय नागरिकों के विकास हेतु जगह जगह पर बगीचों का निर्माण करती है जिससे वातावरण स्वच्छ एवं सुन्दर रहता है। यह मनोरंजन का एक साधन है। आप सभी इसकी हरियाली, साफ सफाई तथा सिंचाई का पूर्ण ध्यान रखें ताकि लोग यहाँ आकर खेल सकें, व्यायाम कर सकें तथा शुद्ध हवा ले सकें। बाग में खूब पेड़ पौधे व फूल लगाएँ। खेलने की सुविधाएँ जैसे – फिसलपट्टी, झूले इत्यादि का समय समय पर रख रखाव करें। पार्क में लगे फव्वारे, लाइट इत्यादि को न तोड़ें। पार्क की सुन्दरता बढ़ाने के साधनों का प्रयोग करें।

ix. सड़कें (Roads) :

अच्छी सड़कें हमें एक जगह से दूसरी जगह पर जल्दी पहुँचाने में मदद करती हैं, दुर्घटना से बचाती हैं तथा हमारे वाहनों की भी रक्षा करती हैं। हमें यातायात सम्बन्धी सभी नियमों का पालन करना चाहिये। हमें अपने वाहन निश्चित स्थान पर ही खड़े करने चाहिये। सड़क को बीच में अवरूद्ध कर उसका उपयोग निजी कार्य के लिये करना अपराध है। सड़कों को साफ एवं सुरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. जीवन में लक्ष्यों की पूर्ति हेतु साधनों का सदुपयोग आवश्यक है।
2. सोच विचार कर साधनों के उपयोग से हमें अधिक संतुष्टि प्राप्त होती है।
3. साधन दो प्रकार के होते है; मानवीय तथा अमानवीय।
4. सभी साधन सीमित हैं एवं इनकी उपयोगिता समय, आवश्यकता, स्थान आदि के अनुरूप भिन्न हो सकती है।

5. जीवन स्तर को उन्नत बनाने के लिये सीमित साधनों का विवेकशीलता से अधिकतम उपयोग करना चाहिये।
6. सामुदायिक संसाधनों का सदुपयोग करना व इनका संरक्षण करना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(i) प्रत्येक क्रिया को करने हेतु हमें .... की आवश्यकता होती है :

(अ) समय (ब) धन (स) शक्ति (द) उपरोक्त सभी

(ii) सरलता की दृष्टि से पारिवारिक साधनों को प्रमुख रूप से कितने वर्गों में बाँटा जा सकता है :

(अ) पाँच (ब) दो (स) तीन (द) सात

(iii) ज्ञान, निम्नलिखित में से कौनसा साधन है :

(अ) भौतिक (ब) रासायनिक (स) आर्थिक (द) मानवीय

(iv) निम्न में से कौनसा साधन समाप्त हो जाने पर पुनः लौटाया नहीं जा सकता :

(अ) समय (ब) धन (स) शक्ति (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(v) निम्न में से कौनसा सामुदायिक संसाधन का स्वरूप है :

(अ) धन (ब) कौशल (स) चिकित्सालय (द) अभिवृत्ति

(vi) ईंधन बचाने हेतु निम्न का प्रयोग किया जा सकता है :

(अ) गैस (ब) विद्युत उर्जा (स) सौर–कुकर (द) चूल्हा

(vii) विनिमय अर्थ व्यवस्था में .... के बदले वस्तुएँ तथा सेवाएँ प्राप्त होती हैं

(अ) ज्ञान (ब) रुचि (स) धन (द) वस्तु

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) .... , किसी कार्य को करने के लिये उत्प्रेरित अथवा निरूत्साहित करती है।

(ii) किसी कार्य को करने में अत्यधिक मन लगाना या लगाव होना उस कार्य में .... को द्योतक है।

(iii) कार्य की कुशलता बढ़ने के फलस्वरूप कार्य की .... एवं .... में बढ़ोतरी होती है।

(iv) आमतौर पर यह देखा गया है कि .... का संरक्षण एवं सही उपयोग नहीं होता है क्योंकि ये निजी एवं व्यक्तिगत नहीं होते।

(v) जीवन स्तर को उन्नत बनाने के लिये सीमित साधनों का .... से अधिकतम उपयोग करना चाहिये।

3. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये :

(i) अभिवृत्तियाँ (ii) ज्ञान

(iii) साधन प्रबन्धन (iv) साधनों का संरक्षण

उत्तरमाला :

1. (i) द (ii) ब (iii) द (iv) अ (v) स (vi) स (vii) स

2. (i) अभिवृत्ति (ii) रुचि (iii) गुणवत्ता, मात्रा (iv) सामुदायिक(v) विवेकशीलता

प्रायोगिक

संसाधनों का प्रबन्धन

(Management of Resources)

हम अपने प्रतिदिन के विभिन्न क्रिया कलापों के लिये विविध मानवीय एवं अमानवीय साधनों का उपयोग करते हैं जिनका हमें आभास भी नहीं होता है। उदाहरण भोजन पकाने के लिये कच्चे भोज्य पदार्थ, बर्तन, ईंधन, चूल्हा, समय, शक्ति व श्रम तथा पाक कौशल आदि की आवश्यकता होती है। इनमें से कोई एक भी वस्तु न हो तो हम भोजन नहीं पका पायेंगे।

व्यक्तिगत प्रबन्धन

1. अपने जीवन में आपको ऐसे कई अनुभव हुए होंगे जब आपको संसाधन के महत्त्व एवं उपयोगिता का आभास हुआ होगा। इस प्रायोगिक के अन्तर्गत किसी एक संस्मरण की व्याख्या करते हुए वैकल्पिक साधन की व्यवस्था एवं सदुपयोग पर प्रकाश डालें।

सामुदायिक प्रबन्धन

2. अपने आस–पास में उपलब्ध सामुदायिक संसाधनों की सूची बनाइये। इनमें से किसी भी एक संसाधन का चुनाव कर निम्न बिन्दुओं पर विवेचना कीजिये।

i. संसाधन की उपयोगिता व महत्त्व।

ii. समुदाय किस प्रकार से संसाधनों का उपयोग कर रहा है?

iii. इसकी देखरेख व संरक्षण का स्तर कैसा है?

iv. संसाधन की उपयोगिता एवं रखरखाव को बढ़ाने हेतु अपने सुझाव दीजिये।